# बुंदेली जिनवाणी

(नित्य पूजन पाठ संग्रह)

रचयिता

**अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत**

**मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज**

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

| | | |
|---|---|---|
| कृति | : | बुंदेली जिनवाणी |
| आशीर्वाद | : | संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित<br>आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज |
| कृतिकार | : | अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत<br>मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज |
| प्रसंग | : | मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का<br>स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा<br>वर्ष 2023 |
| संयोजक | : | बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना |
| संस्करण | : | प्रथम, 1100 प्रतियाँ |
| सहयोग राशि | : | 40 रुपये (पुनः प्रकाशन हेतु) |
| प्रकाशक | : | विद्यासुव्रत संघ |
| प्राप्ति स्थान | : | 1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना<br>मोबाइल-9425128817<br>2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 |
| मुद्रक | : | विकास ऑफसेट, भोपाल |

**पुण्यार्जक**

**स्व० कु० श्रेयसी जैन की स्मृति में**

**नेहा किराना स्टोर**

**बबीना केन्ट, झाँसी (उ. प्र.)**

# नित्य पूजन खण्ड

## मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

## मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

## मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमन्त्रं मंगलं जिनशासनं॥

## मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हंतो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]
श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१॥
सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥
नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥
ये सर्वौषधिऋद्धयः सुतपसो वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशला चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,

सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥
सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥
यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥
इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्चसुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

**(पुष्पांजलिं...)**

===

## जलशुद्धि मंत्र

**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्मममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता - सीतासीतोदा - नारीनरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला - रक्तारक्तोदा क्षीराम्भोनिधि-जलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नवरत्नगंधाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मंत्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्।**

(जल की शुद्धि करके कलशों में जल भरें)

**[यहाँ जल से हाथ धोयें।]**

**ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रक्षालनं करोमि।**

## अमृत स्नान (पात्र शुद्धि)

(अनुष्टुभ्)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्॥

**ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि।**

## तिलक लगाना

(उपजाति)

पात्रेऽर्पितं चंदनमोषधीशं, शुभ्रं सुगंधाहृच्-चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः॥

**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वांग शुद्धि हेतवः नव तिलकं करोमि।**

[१. शिखा, २. मस्तक, ३. ग्रीवा, ४. हृदय, ५. दोनों कान, ६. दोनों भुजाएँ, ७. दोनों कलाई, ८. नाभि, ९. पीठ इन नौ स्थानों पर तिलक करें]

# अभिषेक पाठ

## (आचार्य माघनन्दीकृत)

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्-नतामर - शिरस्तट - रत्नदीप्ति
तोयावभासि - चरणाम्बुज - युग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य-,
तन्मूर्ति - षूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये॥

**अथ पौर्वाह्लिक (माध्याह्लिक/आपराह्लिक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।** (नौ बार णमोकार मंत्र)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखादयस्ताः।
सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

**ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि।** (पुष्प क्षेपण करें)

(इन्द्रवज्रा)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि॥

**ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि।** (अभिषेक की थाली में श्रीकार लिखें)

(अनुष्टुभ्)

कनकाद्रिनिभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः॥

**ॐ ह्रीं पीठ (सिंहासन) स्थापनं करोमि।** (सिंहासन स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार - चामर - सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-
तालध्वजातप - निवारक - भूषिताग्रे।

वर्धस्व नन्द जयपाठ-पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्त-महं श्रयामि॥

(अनुष्टुभ्)

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥

**ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।**

(श्रीजी विराजमान करें)

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य - विधौ - सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि-वारिभि-रपूरय-दुद्ध-कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम-चंदन-भूषिताग्रान्॥

(अनुष्टुभ्)

शात-कुम्भीय-कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोय-पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चंदनादि-सुचर्चितान्॥

**ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।**

(चारों कोनों में जल के कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि-गानै-
र्वादित्र-पूर-जय - शब्द-कलप्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपति - कीर्ति - मेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि॥

**ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।** (अर्घ्य चढ़ाएँ)

(निम्न शलोक पढ़कर जल की धारा करें)

कर्म-प्रबन्ध-निगडै-रपि हीनताप्तम्
ज्ञात्वापि भक्ति-वशतः परमादि-देवम्।

१. नयार्थ तत्त्वम्

त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!
शुद्धौदकै-रभिनयामि महाभिषेकं[१]॥

**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।**

(अनुष्टुभ्)

तीर्थोत्तम-भवैर्नीरैः क्षीर-वारिधि-रूपकैः।
स्नापयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ-सिद्धिदान्॥

**ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।**

## लघुशान्ति-मंत्र

(मालिनी)

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्दै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दु-रेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥

(यहाँ चारों कलशों से अभिषेक करें)

**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं वं वं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं हं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेकं करोमि।**

**ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवंतं कृपालसन्तं श्री वृषादिवीरान्तान् चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवान् आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नगरे... वीर निर्वाण ..... मासोत्तममासे ....पक्षे .....तिथौ...वासरे मुनिआर्यिकाणां श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादभिषेकं करोमीति स्वाहा।**

(वसन्ततिलका)

छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

**ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये छत्रत्रयं स्थापयामि स्वाहा।** (छत्र स्थापित करें)

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर - वारि-धारि-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

**ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये चमरद्वयं स्थापयामि स्वाहा।** (चँवर स्थापित करें)

पानीय-चंदन - सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक - सुधूप-फल-व्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन - वीर-मनन्त-शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

**ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं...।** (अर्घ्य चढ़ाएँ)

हे तीर्थपा! निज-यशो-धवली-कृताशाः,
सिद्धौशधाश्च भवदुःख-महा-गदानाम्।
सद्भव्य-हृज्जनित-पङ्क-कबन्ध-कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत-शान्तिकरा भवन्तु॥

(पुष्पांजलिं...)

नत्वा मुहुर्निज-करै-रमृतोप-मेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त-रम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

**ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब-मार्जनं करोमि।** (श्रीजी का परिमार्जन करें)

स्नानं विधाय भवतोष्ट-सहस्र-नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षु-रिष्ट-मिन तेऽष्ट-मयीं विधातुं,
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि॥

**ॐ ह्रीं सिंहासने जिनबिम्बं स्थापयामि।** (वेदी में श्रीजी विराजमान करें)

(अनुष्टुभ्)

जल-गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीपसुधूपकैः।
फलैरर्घै - र्जिनमर्चेजन्मदुःखापहानये॥

**ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।** (अर्घ्य चढ़ाएँ)

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप-हरं धृत-मादरेण॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्री-वनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं,
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्रचक्रपदवी - राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता-संवृद्धि-सम्पादकं,
कीर्तिश्री-जयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गंधोदकम्॥

**ॐ ह्रीं जिनगंन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।** (उत्तमाङ्ग पर गंधोदक धारण करें)

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममंदं मानुष्यं कृतीजन-गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर-कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ॥

(पुष्पांजलिं...)

===

## अभिषेक भजन-१

(चौपाई)

श्रीजी कौ अभिषेक करौ रे, पाप कर्म सब झर जानें।
अपनौ भाग्य संवर जानें॥
भूल नें जइयौ दर्शन करबौ, दर्शन करबौ अभिषेक करबौ।
सोला के उन्नों में आ जानैं लुटिया में पानी भर लानैं॥
श्रीजी कौ...।
प्रभु अरिहंत वीतरागी हैं, हम चरणों के अनुरागी हैं।
बिना नमोस्तु नैं मानें, अभिषेक करबे की ठानें॥
श्रीजी कौ...।
कबऊँ कबऊँ तो मौका पावें, मौका पावें तौ पुण्य कमावें।
सो किस्मत खों जग जानैं, रोग शोक दुख मिट जानैं॥
श्रीजी कौ...।
जैसे प्रभु जी चमक रये हैं, चमक रये हैं महक रये हैं।
ऐसईं आतम चमकानैं, 'सुव्रत' को विद्या पानैं॥
श्रीजी कौ...।

## अभिषेक भजन.२

(चौपाई)

अरे! ढारौ रे! कलशा पानी के, और पाँव पखारौ स्वामी के।
और अपने पापों खों धो लो, और विद्या गुरु की जय बोलौ॥
अरे! ढारौ रे! कलशा...।
अरे जिनपै कलशा सुर ढारें, और गूँज रये जय-जयकारे ।
उनपे हम कलशा ढारें, और करकें नमोस्तु दुख टारें॥
अरे! ढारौ रे! कलशा...।

===

## वृहत्-शांतिधारा-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रौं मम पापं खण्डय खण्डय जहि जहि दह दह पच पच पाचय पाचय ॐ नमो अर्हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं **अस्माकं** कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न-निवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ-परमेष्ठि-परम-पवित्राय नमो नमः। **अस्माकं** श्रीशान्तिभट्टारकपादपद्म-प्रसादात् सद्धर्म-श्री-बल-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धिरस्तु सद्धर्म-स्वशिष्य-परशिष्य-वर्गाः प्रसीदन्तु नः।

ॐ श्रीवृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यन्ताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः परममङ्गलनामधेया **अस्माकं** इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादश-गणसहिताय, अनंतचतुष्टय-सहिताय समवसरणकेवलज्ञान-लक्ष्मी-शोभिताय अष्टादश-दोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठि-पवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महिताय, अनंत-संसारचक्र-प्रमर्दनाय, अनंत-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, उपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-क्षयङ्कराय अजराय अभवाय **अस्माकं** व्याधिं घ्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक-पूजन-प्रसादात् **अस्माकं** सेवाकानां सर्वदोष-रोग-शोक-भय-पीड़ाविनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगाप-मृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वारिष्ट-शान्ति-कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं-पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा। **मम (अस्माकं) कामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **बलिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं-पापं-वैरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अग्निवायुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशत्रुविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसर्पवृश्चिक-सिंहादिभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वग्रहभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदोषं व्याधिं डामरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमन्त्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मघातं परघातं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व नरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजाश्व-गोमहिषाजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूर-वेताल-शाकिनी-डाकिनीभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वापस्मारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अस्माकं अशुभकर्म-जनितदुःखानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-

भिन्दि। **दुष्टजन-कृतान् मन्त्र-तन्त्र-दृष्टि-मुष्टि-छलछिद्रदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टदेवदानव-वीरनरनाहर-सिंह-योगिनीकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाष्टकुली - नागजनित-विषभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वस्थावर-जङ्गम-वृश्चिक-सर्पादिकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि-कृत-दोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ ह्रीं **अस्मभ्यं** चक्र- विक्रम- सत्त्वतेजो- बलशौर्य- वीर्य-शान्तिः पूरय पूरय। सर्वजीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानन्दनं गोकुलानन्दनं च कुरु-कुरु। सर्वराजानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वानन्दनं कुरु-कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। **अस्माकं** तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्रधनानि सदा सन्तु। सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं वीरं गभीरं निरुपममुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्तिम्॥
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिः स्फूर्यदुच्चैः प्रतापं।
कान्तिं शान्तिं समाधिं वितरतु जगतामुत्तमा शान्तिधारा॥
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

# नित्य नियम पूजन प्रारम्भ

## विनय पाठ

(दोहा)

सपर खौर कें आ गए, नौंने सें जिनधाम।
पूजन के पैलें करें, जिनवर खौं परनाम॥१॥
देव-शास्त्र-गुरु खों भजें, परमेष्ठी खों ध्याएँ।
भजबै खों नौं देवता, कर नमोऽस्तु गुण गाएँ॥२॥
मुक्ती के सिंदूर हौ, निज के जानमकार।
जानौ सबरे तत्त्व खों, बड्डे लम्बरदार॥३॥
भक्तों की अर्जी सुनौ, धरौ मूड़ पै हात।
धर्मों की बरसा करौ, हरौ दुखों की रात॥४॥
कर्म बेड़ियाँ काटकें, हरौ पाप जंजाल।
मेटौ व्यसन बुराईयाँ, कर दो मालामाल॥५॥
भव सें बाहर काढ़ लो, दें कें अपनी छाँव।
चरणों में राखौ हमें, लिंघा बुलाकें गाँव॥६॥
तुमाई छाँयरी में पलै, जो सारौ संसार।
तनक ताकियौ नांय खों, नैया कर दो पार॥७॥
कोऊ तुमसौ नैं दिखै, कितै जांए हम साब।
तोरे बिना हमाऔ जौ, हुज्जे जनम खराब॥८॥
पानी बिन मछरी मरै, तड़फ-तड़फ बेमौत।
बाप-मतारी के बिना, मौंड़ा-मौड़ी रोत॥९॥
जैसें सूरज के बिना, कितै कमल खिल पाएँ।
जैसे सांसों के बिना, जिंदा कौ रै पाएँ॥१०॥
ऊँसई तौ तुमरे बिना, हाल हमारौ होए।

बंदरा सौ उचकै जिया, मार दहाड़ें रोए॥११॥
नाथ! तुमारे राज में, हुइएँ हम हैरान।
तौ तुमखों जिनराज जी, को कै है भगवान॥१२॥
येई सें तौ जा कहें, करुणा में का हर्ज।
अपनौ फर्ज सँभार कै, दूर करौ दुख दर्द॥१३॥
झट्टईं-झट्टईं तुम तकौ, मंगल-मंगल होए।
पाप अमंगल सब टरै, कोऊ कबऊँ नैं रोए॥१४॥
पुद्‌गल की माया तजें, झट्ट करें कल्याण।
भक्त बनें भगवान फिर, पाएँ सुख निर्वाण॥१५॥
करकैं 'सुव्रत' भाव जे, कर रय पूजा पाठ।
जिनशासन की छाँव में, बढ़ै सबई कौ ठाठ॥१६॥

**(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)**

## पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

**ॐ ह्रीं अनादि मूलमन्त्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)**

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

**ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।** (पुष्पांजलिं...)

(दोहा)

भले बुरे कैंसऊँ रहौ, आड़े ठाड़े बैठ।
णमोकार सुमरत रहौ, पाप जाएँगे मैंट॥१॥
भली बुरई कैंसउँ रहै, हर हालत खौं पाए।
जो सुमरे परमातमा, परम शुद्ध हो जाए॥२॥
नमस्कार अपराजिता, पाप विघन जौ खोए।
जित्ते मंगल मंत्र हैं, उनमें पैलौ होए॥३॥
ब्रह्म वाच्य अर्हम् रहौ, परमेष्ठी कौ नांव।
सिद्धचक्र सद्‌बीज है, मैं तो पर लूँ पांव॥४॥
कर्माष्टक सें मुक्त हैं, मोक्षलक्ष्मी धाम।
सम्यक्त्वादि गुण सहित, सिद्धचक्र भगवान॥५॥
जिनवर-जिनवर सुमर कें, सबई विघन भग जाएँ।
भगें शाकिनी भूत अहि, विष निर्विष हों जाएं॥६॥

(पुष्पांजलिं...)

## पंचकल्याणक अर्घ्य

(चौपाई)

जल चंदन चाँवर फूलों खों, नैवज दिया धूप अरघों खों।
उजरे मंगल गा गा लावें, जिनवर के कल्याणक ध्यावें॥

**ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं...।**

## पंचपरमेष्ठी नवदेवता अर्घ्य

जल चंदन चाँवर फूलों खों, नैवज दिया धूप अरघों खों।
उजरे मंगल गा गा लावें, जिनवर के नौं देवा ध्यावें॥

**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्‌सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो-नवदेवेभ्यो अर्घ्यं...।**

## जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

जल चंदन चाँवर फूलों खों, नैवज दिया धूप अरघों खों।
उजरे मंगल गा गा लावें, जिनवर नाव हजारों ध्यावें॥

**ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्त्र-नामेभ्यो अर्घ्यं...।**

## तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

जल चंदन चाँवर फूलों खों, नैवज दिया धूप अरघों खों।
उजरे मंगल गा गा लावें, जिनवर सूत्र जिनागम ध्यावें ॥

**ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी-विरचित-तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।**

## भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

जल चंदन चाँवर फूलों खों, नैवज दिया धूप अरघों खों।
उजरे मंगल गा गा लावें, जिनवर स्तोत्रों खों ध्यावें॥

**ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य-विरचित भक्तामरस्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।**

## तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

जल चंदन चाँवर फूलों खों, नैवज दिया धूप अरघों खों।
उजरे मंगल गा गा लावें, जिनपथ के हर मुनि खों ध्यावें॥

**ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।**

## पूजा प्रतिज्ञा पाठ

**(चौपाई)**

पूज्य अनंत चतुष्टय धामी, जिनशासन के नायक स्वामी।
मूलसंघ जिन पूजन गाएँ नमोस्तु कर हम पुण्य कमाएँ॥

**( आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें )**

जिनपुंगव गुरु मंगलमय हों, परम स्वभावी मंगलमय हों।
ज्ञान ज्योति प्रभु मंगलमय हों, प्रसन्नता धन मंगलमय हों॥१॥
शुचि ज्ञानामृत मंगलमय हों, विभाव नाशक मंगलमय हों।
चिदानंदमय मंगलमय हों, तीन लोकमय मंगलमय हों॥२॥

द्रव्य शुद्ध कर हम हैं लाए, भाव शुद्धि के भाव सजाए।
जल फल आदिक अवलंबन हों, अरिहंता प्रभु मंगलमय हों॥३॥
तीन लोक में एक अनोखे, प्रभु अरिहंत शुद्ध हैं चोखे।
सो हम केवलज्ञान झुण्ड में, करें पुण्य सें हवन कुण्ड में॥४॥

**ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।**

## स्वस्ति मंगल-पाठ

**(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें )**

**(ज्ञानोदय)**

स्वस्ति हों श्री वृषभनाथ जी, अजितनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री शम्भवनाथ जी, अभिनंदन जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री सुमतिनाथ जी, पद्मप्रभ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री सुपार्श्वनाथ जी, चन्द्रप्रभ जी स्वस्ति हों ॥
स्वस्ति हों श्री विमलनाथ जी, अनन्तनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री धर्मनाथ जी, शान्तिनाथ जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री कुन्थुनाथ जी, अरनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री मल्लिनाथ जी, मुनिसुव्रत जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री नमिनाथ जी, नेमिनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री पार्श्वनाथ जी, महावीर जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों चौबीसों स्वामी, देव-शास्त्र-गुरु स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों पाँचों परमेष्ठी, नवों देवता स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री जिनशासन जी, धर्म अहिंसा स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों 'सुव्रतसागर' के, 'विद्यागुरुवर' स्वस्ति हों॥

**(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)**

**(दोहा)**

चौंषठ-चौंषठ ऋद्धियाँ, परमर्षि ऋषिराज।
मंगल हम सबकौ करें, करें हृदय पे राज॥

**(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)**

# देव-शास्त्र-गुरु बुंदेली पूजन

**(लय–देखो देखो जौ कलजुग कौ हाल, लगे नें मन मंदिर में)**

**स्थापना**

पूजौ पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में।
साँचे देव शास्त्र गुरुवर जी, स्वामी ज्ञानी ध्यानी।
नौने सें कर विनय नमोऽस्तु, जिन पूजन की ठानी॥
अइयौ-अइयौ रे श्री भगवान, विराजौ मन मंदिर में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।** (पुष्पांजलिं...)

जीबे मरबे की आशा नें, खूबइ करौ कबाड़ौ।
जिनसें कछू आसरौ मांगौ, उन ने पल्ला झाड़ौ॥
दइयौ-दइयौ रे तनक स्थान, बिठाकें अपने चरणों में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।**

कबउँ जलाकैं कबउँ तपाकैं, जा दुनियाँ तौ मारै।
ये दुनियाँ में का रैनें, जो उठा-पटक कर डारै॥
मेटौ-मेटौ रे जे दुख धाम, बिठाकैं अपनी छंइयों में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।**

कबहुँ सरग के सपने देखें, कबहुँ नरक की गैलें।
लेकिन हाँत मलत ही रै गए, घर घूला से खेलें॥

दइयौ-दइयौ रे अक्षय मुकाम, बिठाकें अपनी शरणों में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।**

देव शास्त्र गुरुओं की दम पै, मोक्ष अटारी चढ़नें।
मुक्तिवधू सें ब्याव रचावे, मुनि के जैसौ सजनें॥
करियौ-करियौ रे काम तमाम, बचा कें खुद खों पापों से।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।**

चार इंच की येइ जीभ नें, का-का करम कराए।
फिर भी ससरौ पेट भरौ नें, भौतई पाप कमाए॥
छोड़ौ-छोड़ौ रे जे रसपान, रमा लो मन आतम में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।**

कित्ते दिया उजारे पर जो, मन कारे कौ कारौ।
ऐसों दिया उजरवा दो अब, हो जाए उजयारौ॥
ताकौ-ताकौ रे निज निर्वाण, जला कें ज्योति चेतन में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।**

कर्मों की हम ओढ़ चदरिया, बने पुतरिया नाचें।
भव-भव ढो रय कर्म पुटरिया, दुख की चिठिया बाचें॥

काटौ-काटौ रे आठई गठान, लगा कें धुआँ कर्मों में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥
**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**
मन चाहौ हम करत रेत सो, अनचाहौ फल पावें।
देव-शास्त्र-गुरु की मानें तौ, अजर अमर हो जावें॥
राखौ-राखौ रे प्रभु सम्मान, चढ़ाकें फल पूजन में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥
**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।**
देव-शास्त्र-गुरुवर सें केवल, इत्तई अरज हमारी।
बस आशीष शीश पै राखौ, हम हैं दास पुजारी॥
पइयौ-पइयौ रे जोई वरदान, चढ़ाकें अर्घ्य अरचन में।
हम तो कर रये पूजन ध्यान, बिठा के मन मंदिर में॥
पूजौ-पूजौ रे गुरु भगवान, लगौ रे मन मंदिर में॥
**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## जयमाला-१

गाऔ-गाऔ रे प्रभु जयमाल, जबंई तौ सारे काम बनें।
आठ द्रव्य की भर कें थाल, बजा-बजा कें ताली ताल,
अब गा रये हम जा जयमाल।
अइयौ-अइयौ रे बाल-अबाल, जबंई तौ सारे काम बनें॥१॥
श्री अरिहंत सिद्ध हैं देव, इनकी करनें रोजइ सेव,
सो भर जै है खाली जेब।
तुमरौ हमरौ कटै रे जंजाल, जबंई तौ सारे काम बनें॥२॥

गुरु आचार्य और उवझाय, संत समागम अब मन भाय,
जिनवाणी के ग्रंथ सुहाय।
टेकौ-टेकौ रे इनखों भाल, जबंई तौ सारे काम बनें॥३॥
देव शास्त्र गुरु जेई कहाएँ, इनकी पूजा रोज रचाएँ,
तौ मनचाहौ फल पा जाएँ।
होजें फिर तौ रे मालामाल, जबंई तौ सारे काम बनें॥४॥
जो जन इनकी काटें बात, पाएँ दुखों की बे सौगात,
उनकी जाएँ नरक बारात।
अब नें चलियौ जा चाल कुचाल, जबंई तौ सारे काम बनें॥५॥
'सुव्रत' तोखों सौंपें डोर, अब तौ खेंचौ अपनी ओर,
झट्ट मिलै आतम की भोर।
एंसई करियौ रे भक्तों कौ हाल, जबंई तौ सारे काम बनें॥६॥
गाऔ-गाऔ रे प्रभु जयमाल, जबंई तौ सारे काम बनें॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

## जयमाला-२

**(दोहा)**

गइयौ-गइयौ रे सबइ, मिल जुर कें जयमाल।
जबंइ काम सबरे बनें, हुइएं मालामाल॥

**(चौपाई)**

आठ द्रव्य की भरकें टाठी, काट-काट कें करमन काठी।
अब पी रए हम जौ रस प्याला, देव शास्त्र गुरु की जयमाला॥
श्री अरिहंत-सिद्ध हैं देवा, इनकी करनें रोजइ सेवा।
सो भर है खाली भण्डारौ, मिट जै है सबरौ जंजारौ॥
गुरु आचार्य और उवझाया, संतसमागम अब मन भाया।

जिनवाणी के ग्रंथ सुहाएँ, जे अपने आदर्श कहाएँ॥
देव शास्त्र गुरु जेई कहाएँ, इनकी पूजा रोज रचाएँ।
तौ मन चाहौ फल पा जाएँ, मालामाल सबइ हो जाएँ॥
जो जन इनकी काटें बातें, पाएँ दुक्खों की सौगातें।
उनकी नरकों में बारातें, सजें सबइ की खाएँ लातें॥
सो नें चलियौ चाल-कुचालें, जे सें भगवन झट्ट बचा लें।
'सुव्रत' खों भव पार लगा कें, करें सुखी सुख मोक्ष दिला कें॥

(दोहा)

मिल जुर कें हमनें करी, जयमाल गुणगान।
देव शास्त्र गुरु कौ करें, नमोस्तु कर सम्मान॥

**ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

(दोहा)

देव शास्त्र गुरुवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, देव शास्त्र गुरुराय ॥

(पुष्पांजलिं...)

===

## नौं देवता पूजन

(लय—मन हो रओ है...)

नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं।
अरिहंत–सिद्ध आचार्य महान, उपाध्याय साधू भगवान,
जिन धर्मागम चैत्य सुजान।
जिन चैत्यालय मन में बिठाउनैं, अब तौ भक्ति से भगवन बुलाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥
सुनकर कें मोरो आह्वान, हृदय पधारौ हे! भगवान्,
मोरौ भी कर दो कल्याण।
मोखों करतब तौ अपनों निभाउनैं, अब तौ आतम खों अपनी सजाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥

**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय नवदेव समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।**

जन्म–मरण की खाकें मार, कर बैठो मैं पापाचार,
सो हो रई अब हाहाकार।
ये पीड़ा से छुटकारा पाउनैं, अब तौ चरणों में जल खों चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥

**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।**

करकै रोजइ भागमभाग, राग–द्वेष की बर रई आग,
जे में जल गओ सब वैराग्य।
साँचे वीतराग की छइयाँ पाउनैं, अब तौ चरणों में चंदन चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥

**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।**

घूम चुकौ सबरौ संसार, देख चुकौ घर बाहर द्वार,
कोऊ नै तुम सौ हितकार।
तोरी साँची शरण मोय पाउनैं, अब तौ चरणों में अक्षत चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥
**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।**
भाग विषय सें हो लाचार, सबई जगह पाई दुत्कार,
अब कैसें हुइए उद्धार।
मोखों मुक्ति से ब्याव कराउनैं, अब तौ चरणों में पुष्पक चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥
**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।**
माल मसालौ पेलमपेल, चल रऔ है पापों कौ खेल,
सो भोगौ नरकों की जेल।
अब तौ भक्ति कौ रस चख पाउनैं, अब तौ चरणों में नैवेद्य चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥
**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।**
सबई जगह छाऔ अँधयार, कैसे हुइए बेड़ा पार,
करें कौन सें अरज पुकार।
साँचाी श्रद्धा की ज्योति जलाउनैं, अब तौ चरणों में दीपक चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥
**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।**
कर्मों की देखौ तौ चाल, मकड़ी जैसौ बुन रए जाल,
का हुइए अब अपनौ हाल।
सबरे कर्मों की धूरा उड़ाउनैं, अब तौ चरणों में धूप चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥
**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।**

कबऊँ गऔ मैं ये के द्वार, कबऊँ गऔ मैं ओ के द्वार,
मोरौ हो रऔ बंटाढार।
मोखों मोक्ष महाफल चाउनैं, अब तौ चरणों में फल खों चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥
**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।**

होवे खों अब मालामाल, भक्ति भरी उड़ाऊँ गुलाल,
अर्घ्य चढ़ाऊँ भर-भर थाल।
तोरी किरपा सें धन्य हो जाउनैं, अब तौ चरणों में अरघ चढ़ाउनैं।
नौं देवों की पूजा रचाउनैं, अब तौ श्रद्धा से माथौ झुकाउनैं॥
**ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

**जयमाला-१**

(लय-सो जा वारे वीर...)

मोरे नवदेवा भगवान-२
एक बार बस मोपै तुम तौ, दे दइयौ रे ध्यान॥ मोरे...
घाति विजेता जग के नेता, अरिहंता भगवान।
मुक्ति दुलैया के दूलाजू, देव सिद्ध भगवान॥ मोरे...
आचारज-उवझाय साधु जी, जे हैं गुरु महान।
गैल बता रए हैं भक्तों खों, करें इष्ट कल्यान॥ मोरे...
जेई पंच परमेष्ठी साँचे, भक्तों के भगवान।
दुख दारिद्र मिटावे वारे, दे रय हैं वरदान॥ मोरे...
तीर्थंकर जिनवर जो कैवें, वो जिनधर्म महान।
जो सबखों भव पार उतारे, करवा दै निर्वाण॥ मोरे...
शास्त्र-पुराण रहे जिन आगम, देवें सम्यग्ज्ञान।
परमेष्ठी की प्रतिमाएँ जिन-चैत्य बिम्ब भगवान॥ मोरे...

भगवानों के मंदिर हैं जो, पूज्य जिनालय धाम।
जे अपने नव देवा साँचे, जेई बनावें काम॥ मोरे...
नवदेवों के भगत जगत में, बने बड़े धनवान।
'सुव्रत' धरकें कर्म नशावें, हुइएँ नैं हैरान॥ मोरे...

**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं---।**

## जयमाला-२

**(दोहा)**

जयमाला सें पूज लो, नौं देवा भगवान।
जिनकी किरपा सें बनें, भक्तों के सब काम ॥

**(जोगीरासा)**

नौं ठइया नौं देवा अपने, जैन धर्म में प्यारे।
जिनकी पूजा भक्ती करकें, हो जें वारे न्यारे॥
ये सें भज्जा जा कैरऔ मैं, पैलें इनें पकर लो।
करौ काम फिर कोनऊँ दूजौ, पैलें इनें सुमर लो॥१॥
घाति विजेता जग के नेता, अरिहंता भगवंता।
मुक्ति दुलैया के दूल्हा जी, साँचे सिद्ध महंता॥
आचारज उवझाए साधु जी, साँचे गुरुवर जच रए।
गैल बता रए हम भगतों खों, हम दर्शन कर नच रए॥२॥
जेइ पंचपरमेष्ठी सांचऊँ, भगतों के हैं स्वामी।
दुख दारिद्र मिटावे वारे, साँचे के आसामी॥
तीर्थंकर सर्वज्ञ कहें जौ, वौ जिन धर्म हमारौ।
जौ सबखों भव पार उतारै, देवै मोक्ष सहारौ॥३॥
जैन पुराण ग्रंथ जिन आगम, इनसौ कोउ नें दूजौ।

जिन प्रतिमाएँ जिन बिंबों खों, करकें नमोस्तु पूजौ॥
जिन भगवानों के मंदिर खों, कैत जिनालय साँचे।
जे नौं देवा जिनें देखकें, भगतों के मन नाँचे॥४॥
नौं देवों के भगत जगत में, सांचऊँ में अलबेले।
धन दौलत कौ उनें नै टोटौ, लगें उनईं के मेले॥
दुनियाँ की हर विद्या उनखों, इष्ट सिद्ध हो जैं हैं।
'मुनिसुव्रत'खों मुक्ति दुलैया, फिर माला पेनै हैं ॥५॥

(दोहा)

भजौ भजौ नौं देवता, सुमरौ  सुमरौ नाम।
सुख संपत्ति जे करें, जेइ बनैं हैं काम॥

**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं---।**

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों खों मेंट दो, नौं देवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

# अर्घ्यावली

## श्री सिद्धपरमेष्ठी अर्घ्य

(दोहा)

आठ कर्म खों काट के, कर लई मुक्ति खोज।
नमोऽस्तु कर हर सिद्ध खों, अर्घ्य चढ़ाएँ रोज॥

**ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्री चौबीसी अर्घ्य

लैं अर्घ्य करें गुणगान, प्रभु की भक्ति में।
झट भक्त बने भगवान, मिले निज मुक्ति में॥
श्री चौबीसई जिनराज, समारों भक्तों खों।
हम करें नमोऽस्तु आज, चढ़ारय अरघों खों॥

**ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिला लय द्रव्य जे आठौ, बना लऔ अर्घ्य सुंदर सौ।
बतइयौ गैल तिरबे की, सजइयौ रूप मंदिर सौ॥
तबई भज कें वृषभप्रभु खों, निभारय फर्ज हम अपनौ।
करें सादर नमोऽस्तु हम, करौ पूरौ तुमई सपनौ॥

**ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री चंद्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

तुमई आठवें तीर्थंकर हौ, तुमई आठवीं भू पर हौ।
तुमई सरीखे आठ करम खों, हरबे मन हमरौ तरसौ॥

सुनौं आठवें चंदा स्वामी, दइऔ मुक्ति कौ घर जी।
अर्घ्य चढ़ा कें करें नमोऽस्तु, पूरी करौ तुमई अरजी॥

**ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री शांतिनाथ स्वामी अर्घ्य

**(त्रिभंगी)**

जग कौ हर प्राणी, बन अज्ञानी, करम कहानी, में भटकें।
फिर भूखे प्यासे, भरकें साँसें, शांति तलाशें, घट-घट में॥
सो शांति जिनंदा, परमानंदा, दे कें चंगा, करौ हमें।
हम भाव बना कें, अर्घ्य चढ़ा कें, मूड़ झुका कें, भजें तुम्हें॥

**ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी अर्घ्य

**(जोगीरासा)**

जौ संसार संकटों कौ घर, इतै नें कौऊ हमारौ।
कित्तई लुक लो छुपलो लेकिन, ये नें सबखौं मारौ॥
हे! मुनिसुव्रत स्वामी अब तौं, हम पे नजरें डारौ।
अर्घ्य चढ़ा हम करैं नमोऽस्तु, झट्टईं हमखौं तारौ॥

**ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

**(चौपाई)**

राज-पाट राजुल खों तजकें, नेमिनाथ गिरनारी चढकें।
मुक्ति के संग रचे स्वयंवर, जिन खों नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ाकर॥

**ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

हमें पारस प्रभु भजकें, सबई उपसर्ग जय करनें।
धरम सें नें भटकनें है, विकट संकट विजय करनें॥
मुनी अरहंत बनकर कें, करम सारे नशानें हैं।
मनों पैलें नमोऽस्तु कर, अरघ सादर चढ़ानें हैं॥

**ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(शंभू)

हे! वीर तुमारे दर्शन खों, हम हात जोर कें आए हैं।
अब करकें नमोऽस्तु पाँव परें, चरणों में अरघ चढ़ाए हैं॥
हम जिएँ मरें बस बढ़ा सकें, जग में जो शान तुमारी है।
सो वीरा! हीरा करौ हमें, बस इत्तई अरज हमारी है॥

**ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री बाहुबली स्वामी अर्घ्य

(हरिगीतिका)

बाहुबली की साधना खों, देख कें अचरज भऔ।
तीर्थंकरों सें नाम जादा, आज जिनकौ पुज रहौ॥
हर आफतों खों जीत लेवें, गैल नापें हम भली।
सो अर्घ्य अर्पित कर नमोऽस्तु, हम भजत बाहुबली॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्री जिनवाणी अर्घ्य

(त्रिभंगी)

हे! माँ जिनवानी, तोरी वानी, जग कल्यानी, धरम धरै।
अज्ञान नशाए, पाप मिटाए, मोक्ष दिलाए, करम हरै॥
सब भक्त पुकारैं, गैल निहारैं, पाँव पखारैं, अर्घ्य धरैं।
सो सुव्रतसागर, पावे शिवपुर, हात जोरकें, अर्ज करैं॥

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव जिनवाणी दैव्यै अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्री निर्वाणक्षेत्र अर्घ्य

(सुविद्या)

जहाँ जितै सें जित्ते साधक, मोक्ष पधारे होंएँ।
उन निर्वाण-सिद्धक्षेत्रों खों, नमन हमारे होंएँ॥
जुदे-जुदे में संगैं-संगैं, उनखों अर्घ्य चढ़ाएँ।
सिद्ध शिला खों पावे हम तौ, सादर शीश झुकाएँ॥

**ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्री सम्मेदशिखर अर्घ्य

(शंभू )

सबरे धरमौ कौ धरम जौई, सबरे शास्त्रौं कौ सार रहौ।
सबरे तीर्थों कौ तीरथ है जौ, संयम को विस्तार कहौ॥
जब करैं बंदना भावों से, सो दुर्गति कैसें हो जें हैं।
सम्मेदशिखर खौं अर्घ्य धरैं, सो सारे तीरथ हो जें हैं॥

**ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## आचार्य श्रीविद्यासागर अर्घ्य

(सुविधा)

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं, मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाए, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई से तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## महाऽर्घ्य

(हरिगीतिका)

हम पाँच परमेष्ठी भजें, संगैं भजे नौं देवता।
भज सिद्ध अतिशय क्षेत्र के, कृत्रिम अकृत्रिम देवता॥
नंदीश्वरा जी पाँच मेरू, तीस चौबीसई भजें।
प्रभु के हजारों नाम भज कैं, पूज्य रत्नत्रय भजें॥
कल्यान पाँचों तीर्थ भज, अनुयोग चारों वाँचना।
बारा भजें सोला भजें, दसधर्म मुनि की भावना॥
मन वचन तन से शांति पावें, हम करत जा प्रार्थना।
करकें नमोऽस्तु हात जोरें, अर्घ्यमय हो अर्चना॥

(दोहा)

हम पूजें जग पूज्य खों, महा अर्घ्य सें आज।
पाँव परें कीर्तन करें, रखियौ सब की लाज॥

**ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो**

नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपंचाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पंचमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्यखण्डे-भारतदेशे-मध्यप्रदेशे-......जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

## शांतिपाठ

(हरीगीतिका)

चौबीस तीर्थंकर भजें हम, सोलवें शांति जिनम्।
पूजें जिनें सौधर्म आदि, सौंप कें अपनौं जनम॥
पर इंद्र चक्री के सरीखे, ठाठ अपने हैं कहाँ।
सो पूजवें में जो कछू भूलें, भयीं करियौ क्षमा॥

(दोहा)

चौबीसई भगवान जी, परमेष्ठी जिनराज।
दुनियाँ खों सुख शांति दो, सफल करौ हर काज॥

(शांतिधारा...)

सिसक-सिसक हम रो रये, देख दुखी संसार।
सुखिया आप बनाइयौ, देऔ शांति की धार॥

(हरिगीतिका)

शुभ छतर-चामर आदि, प्राति-हार्य प्रभु के शोभते।
सबरे उपद्रव शांत हों, आनंद के पल खोजते॥
सो शांतिनाथ जिनंद हमखों, शांति कौ वर दऔ तौ।
संसार में सुख शांति हो, ऐंसौ कछु कर देऔ तौ॥
राजा प्रजा खों शांति होवे, देश में परदेश में।
हो शांति पूजक पालकों खों, शांति हो मुनिभेष में॥
शुभ वखत पै पानी गिरे, ठंडी परै गर्मी परै।
दुष्काल मारी चोरि जारी, नें कितउँ व्याधी परै॥

(दोहा)

परम अहिंसा धरम खों, पालै सकल जहान।
करौ शांति संसार में, चौबीसई भगवान॥

(हरिगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों कौ करें, जिनदेव खौं वंदन करें।
सत्संगती हो सज्जनों की, संयतों के गुन कहें॥
परदोष कैबे मौन धर, मीठे वचन सबसें कहें।
जौलौं मिलैं नें मोक्ष तौलों, आत्म कौ चिंतन करें॥
मोरे हृदय में पाँव तोरे, पाँव में मोरौ हृदय।
तौलों रहै जौलों मिलै नें, मोय मुक्ति को निलय॥
सो भक्ति में कमिएं रईं जो, वे क्षमा प्रभु कीजियौ।
'सुव्रत' समाधि के मरन खों, जिन चरन प्रभु दीजियौ॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

## विजर्सन पाठ

(दोहा)

जानैं अनजानैं भईं, हमसें जो भी भूल।
तोरे परम प्रसाद सैं, हुइएं दूर समूल॥
मंत्र जाप पूजन विधी, शांति विसर्जन पाठ।
करौ सबईं भूलैं क्षमा, हमें कछू नईं आत॥
हम जैंसौ पापी कितै, तुम जैंसौ भगवान।
तन्नक मोखौं कर क्षमा, कर लो आप समान॥
अपनी शक्ति विचार कें, पूजे जिन भगवान।
शांति विसर्जन अब करें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु।** (कायोत्सर्गं...)

===

# विद्यागुरु बुंदेली पूजन विधान

**स्थापना ( ज्ञानोदय)**

मोरे गुरुवर विद्यासागर, सब जन पूजत हैं तुमखों।
हम सोई पूजन खों आए, तारो गुरु झट्टईं हमखों॥
मोरे हिरदे आन विराजो, हाथ जोड कैं टेरत हैं।
और बाठ जइ हेर रए हम, हँस कैं गुरु कब हेरत हैं ॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।** (पुष्पांजलिं)

बाप मतारी दोइ जनौं नैं, बेर-बेर जनमों मोखों।
बालापन गव आइ जुवानी, आव बुढापौ फिर मोखों॥
नर्रा-नर्रा कैं हम मर गए, बात सुनैं नैं कोऊँ हमाई।
जीवौ मरबौ और बुढ़ापौ, मिटा देव मोरो दुखदाई॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।**

मोरे भीतर आगी बर्रई, हम दिन रात बरत ओं में।
दुनियाँदारी की लपटों में, जूड़ापन नैं पाऔ मैं॥
मोय कबऊँ अपनों नैं मारौ, कबऊँ पराए करत दुखी।
ऐंसी जा भव आग बुझादो, देव सबूरी करौ सुखी॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।**

कबऊँ बना दव मोखों बड्डौ, आगैं-आगैं कर मारौ।
कबऊँ बना कैं मोखों नन्नौ, भौतइ मोय दबा डारौ॥
अब तौ मोरौ जी उकता गओ, चमक-धमक की दुनियाँ में।
अपने घाँई मोय बना लो, काय फिरा रए दुनियाँ में॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।**

कामदेव तौ तुमसैं हारौ, मोय कुलच्छी पिटवाबै।

सारौ जग तौ मोरे वश में, पर जौ मोखों हरवाबै॥
हाथ जोड़ कैं पाँव परै हम, गैल बता दो लड़बे की।
ए खौं जीतैं मार भगावैं, बह्मचर्य व्रत धरबे की॥
**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।**
हम तौ भूखे नैं रै पावैं, लड़ुआ पेड़ा सब चाने।
लुचईं ठडूला खीच औंरिया, तातौ वासौ सब खाने॥
इनसैं अब तौ भौत दुखी भए, देव मुक्ति इनसैं मोखों।
मोय पिला दो आतम-इमरत, नैवज से पूजत तोखों॥
**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...**
दुनियाँ कौ जो अँधयारौ तौ, मिटा लेत है हर कोऊ।
मोह रऔ कजरारौ कारौ, मिटा सके नैं हर कोऊ॥
ज्ञान-जोत सैं ए करिया कौ, तुमने करिया मौं कर दऔ।
ऊँसईं जोत जगा दो मोरी, दीया जौ सुपरत कर दऔ॥
**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...**
खूबइ होरी हमने बारी, मोरी काया राख करी।
पथरा सी छाती बारे जै, करम बरैं नैं राख भयी॥
तुम तौ खूबइ करौ तपस्या, ओइ ताप सैं करम बरैं।
मोय सिखा दो ऐंसे लच्छन, तुम सौ हम भी ध्यान धरैं॥
**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**
तुम तौ कौनऊँ फल नइँ खाउत, पीउत कौंनऊँ रस नँइयाँ।
फिर भी देखौ कैसे चमकत, तुम जैसो कौंनऊँ नँइयाँ॥
हम फल खाकैं ऊबै नइयाँ, फिर भी चाने शिवफल खौं।
ओई सैं तौ चढ़ा रए हम, तुम चरणों में इन फल खौं॥
**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।**

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं, मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाए, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
एई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## जयमाला

(दोहा)

विद्यागुरु सौ कोऊ नैं, जग में दूजौ नाँव।
सबइ जने पूजत जिनैं, और परत हैं पाँव॥
दर्शन पूजन दूर है, इनकौ नाँव महान।
बड़भागी पूजा करैं, और बनावैं काम॥

(ज्ञानोदय)

मल्लप्पा जू के तुम मौड़ा, श्रीमति मैया के लल्ला।
गाँव आपनौ तज कैं देखौ,करौ धरम कौ तुम हल्ला॥
दया धरम कौ डण्डा लै कैं, फैरा रय तुम तौ झण्डा।
ऐसै तुम हौ ज्ञानी ध्यानी, फोरत पापों कौ भण्डा॥१॥
एकई बिरियाँ ठाडे हो कैं, खात लेत नैं हरयाई।
नौंन मसालौ माल मलीदा, कबउँ खाव नैं गुरयाई॥
जड़कारै में कबऊँ नैं ओढ़ौ, प्यांरौ चारौ और चिटाई।
जेठमास में गर्मी सैनें, पिऔ कबऊँ नैं ठण्डाई॥२॥
तुम बैरागी हौ निरमोही, सच्ची मुच्ची में भज्जा।
बन कैं जिनवाणी के लल्ला, पूजौ जिनवाणी मज्जा॥
सब जग के तुम गुरुवर बन गए, ये में का कैंसौ अचरज।
गुरु के संगै मात-पिता के, गुरु बन गय जौ है अचरज॥३॥

मोय तुमारी चर्या भा गई, तबइ करत अर्चा तोरी।
तीनईं बिरियाँ माला फेरत, रोज करत चर्चा तोरी॥
अर जौ मोरौ पगला मनवा, तुम खौं तज कैं नैं जावै।
कहूँ रमैं नैं जौ बंदरा सौ, उचक-उचक कैं इत आवै॥ ४॥
कबउँ-कबउँ जौ मोरइ बन कैं, खूबइ खूब नचत भैया।
सो सब हम खों कहें दिवानौ, और कैत का-का दैया॥
भौत बडे आसामी तुम तौ, तुम व्यापार करौ नगदी।
सौदा कौ नैं काम करौ तुम, नैं दुकान नैं है गद्दी॥५॥
जग जाहिर मुस्कान तुमारी, तुम सी कला कहूँ नईंयाँ।
नैं कोऊ खों हामी भरते, नाहीं कँबऊँ करत नईंयाँ॥
मूड़ उठा कैं हेरत नईंयाँ, और कैत देखौ- देखौ।
चिटिया जीव-जन्तु दिख जावै, पै भक्तों खों नैं देखौ॥६॥
महावीर कौ समोसरण तौ, राजगिरी पै खूब लगौ।
ऊँसइ बुन्देली में शोभै, संघ तुमारौ खूब बड़ौ॥
करी बड़ेबाबा की सेवा, सो बन गए छोटेबाबा।
काम करौ तुम बड़े - बड़े पै, काय कैत छोटे बाबा॥७॥
कबउँ-कबउँ तौ तुम बोलत हौ, आगम कौ तब ध्यान रखौ।
समयसार खों खूबइ घोकौ, आतम रस खौं खूब चखौ॥
नौंने-नौंने ग्रन्थ रचा दय, भौत बना दय तीरथ हैं।
दुखियों की करुणा खों सुनकैं हाथ दया कौ फेरत हैं॥८॥
ए की का का कथा कहें हम, कबउँ होय जा नैं पूरी।
भक्तों खों भगवान बना कैं, हरलई उनकी मजबूरी॥

इतनौ सब उपकार करत हौ, फिर भी कछू कैत नईंयाँ।
एई सें तौ जग जौ कैरव, तुम सौ कोऊ है नईंयाँ॥९॥
अब किरपा ऐसी कर दइयो, पाँव-छाँव में मोय रखौ।
अपने घाँई मोय बना लो, अपने से नैं दूर करौ॥
'सुव्रत' की जा अरज सुनीजै,और तनक सौ मुस्कादो।
भवसागर सैं मोरी नैया, झट्टईं-झट्टईं तिरवा दो॥१०॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

**(दोहा)**

गुण गावैं पूजा करैं, करैं भगति दिन रैन।
बस इत्तइ किरपा करौ, मोय देव सुख चैन॥
तुम तौ बड़े उदार हो, और गुणी धनवान।
पूजा जयमाला करी, मैं मौड़ा नादान॥
विद्यागुरु खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुकारय माथ॥

**(पुष्पांजलिं)**

## (अर्घावली)

**पंचाचार** (ज्ञानोदय)

बालपने सें प्रभु दर्शन कौ, तुम पै रंग चढौ ऐंसौ।
सम्यग्दर्शन पाकें गुरु सें, रूप बना लऔ प्रभु जैंसौ॥
तन्नक सौ तौ तको नांय खों, दर्शन दै दइऔ हमखों।
हे! दर्शन आचारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१॥

**ॐ ह्रूं दर्शनाचारगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

ज्ञानगुरू नें कैसी घुट्टी, तुमें पिला दई ज्ञानइं की।
भोले भाले हम भक्तों में, जोत जगा दई ज्ञानइं की॥

अठ पहरी घी अष्टांगी सौ, ज्ञान देत रइऔ हमखों।
ज्ञानाचारी हे ! विद्यागुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२॥

**ॐ ह्रूं ज्ञानाचारगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

मोय लगत कै चंदा सूरज, तोए देखबे खों निकरें।
तेरा विध चारित्र देख कें, भाग्य हमौरों के निखरें॥
कंजूसी तन्नक सी तजकें, अपनौ धन दइऔ हमखों।
हे ! चारित्राचारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥३॥

**ॐ ह्रूं चारित्राचारगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

सहौ अमरकण्टक में जाड़ौ, कुण्डलपुर में गर्मी खों।
हरयाई गुरयाई नौन मिठाई, भा नईं रई इन धर्मी खों॥
मस्कइं मस्कइं तप के रसखों, लै कें दै दइऔ हमखों।
तपाचार के हे ! भण्डारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥४॥

**ॐ ह्रूं तपाचारगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

तुम तौ अपने दम सें जादा, करौ तपस्या तूफानी।
जबईं तुमारे इन चरनों में, भरें सुरासुर नर पानी॥
वीर्यशक्ति जब बाँटौ तब तौ, बिसरा नें दइऔ हमखों।
वीर्याचारी हे! विद्या गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥५॥

**ॐ ह्रूं वीर्याचारगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

**बारह तप**

ढूँढ तनक सी कहूँ कौनियाँ, खाबौ पीवौ सब तज कें।
उपवासों की लैन लगा दई, आतम परमातम भज कें॥
फिर भी आलस करौ नें ए, राज बता दइऔ हमखों।
हे ! अनशन तपधारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥६॥

**ॐ ह्रूं अनशनतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

तन्नक-मन्नक एकइ बिरियाँ, रूखौ सूखौ सौ खाऔ।
फिर भी कबउँ करौ नें गुस्सा, कबउँ पेट भर नें खाऔ॥
लें कें तनक बाँटवौ मुतकौ, जौइ सिखा दइऔ हमखों।
हे ! ऊनोदरतपधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥७॥

**ॐ ह्वूं अवमौदर्यतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

एकइँ बिरियाँ खात ओइ पै, बन्न-बन्न के लेत नियम।
निजी पुण्य की जांच परख खों, आसक्ती खों त्यागौ तुम॥
खूबई करौ परीक्षा लेकिन, फैल नें कर दइऔ हमखों।
वृत्ति परिसंख्यान धरौ सौ, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥८॥

**ॐ ह्वूं वृत्तिपरिसंख्यानतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

खट्टे मीठे खारे चिपरे, कड़वे आदि छै रस खों।
बखत-बखत पैं तजकें तुमतौ, लेत-रेत आतमरस खों॥
अपने जैसों सरस रसीलौ, जीवन दे दइऔ हमखों।
हे ! रसत्यागी विद्या गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥९॥

**ॐ ह्वूं रसपरित्यागतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

कित्तउ लुकलौ छुपलौ फिर भी, बच नें सकौ तुम भक्तों सें।
सो क्षेत्रों पे जाकें बैठौ, तन्नक सोत करौटों सें॥
रहौ भीड़ में आप अकेले, दूर भगइऔ नें हमखों।
विविक्तशैय्यासन तप धारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१०॥

**ॐ ह्वूं विविक्तशैय्यासनतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

जड़कारे में बिना चटाई, गर्मी में बिन हरयाई।
खड़गासन शीर्षासन करकैं, खुद में खोऔ सुखदाई॥

बन्न-बन्न सें तपा-तपा तन, निजसम चमकइऔ हमखों।
कायक्लेश तपधारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥११॥
**ॐ ह्रूं कायक्लेशतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**
वैसें तो निर्दोष रहौ तुम, फिर भी दोष लगें कौनउं।
तौ खुद खौं, खुद के सिस्सौं खों, दै कें मौन रहौ मोनउं॥
निंदा गर्हा आलोचन से, शुद्ध बनइऔ अब हमखों।
तुम तप प्रायश्चित्त धरौ सौ, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१२॥
**ॐ ह्रूं प्रायश्चित्ततपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**
पूज्य जनों की चार बन्न की, झुक कें भौत विनय करते।
भक्तों की जब सुनौ नमोऽस्तु, दै आशीष प्रेम रखते॥
अब तौ खोलौ मोक्ष किवाड़े, तीर्थंकर घांई हमखों।
विनय तपोगुण धारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१३॥
**ॐ ह्रूं विनयतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**
आलस तज कें जैन धरम के, जब तुम समझौ शास्त्रों खों।
तब तौ नांय-मांय नें हेरौ, पढ़ौ पढ़ाऔ सिस्सों खों॥
तोखों पढ़वें बारी विद्या, सिस्स बना दइऔ हमखों।
हे ! स्वाध्याय तपो गुणधारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१४॥
**ॐ ह्रूं स्वाध्यायतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**
जो भी तोखों हेरै टेरै, ओकी खबर रखौ तुम तौ।
त्यागी व्रतियों के रखवारे, टेरें हेरें अब हम तौ॥
खबर हमारी भी लँय रइयौ, चरण शरण दइयौ हमखों।
वैयावृत्त तपोगुणधारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१५॥
**ॐ ह्रूं वैयावृत्ततपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

बाप मतारी भाई बन्धु तज, दुनियाँदारी भी छोड़ी।
और कहें का तुमने अपनी, काया सें ममता मोड़ी॥
जब बारात मोक्ष लै जइऔ, संगै लै चलियौ हमखों।
हे ! व्युत्सर्ग तपो गुणधारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१६॥

**ॐ ह्रूं व्युत्सर्गतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

जग कौ सार दिगम्बर मुद्रा, तप कौ सार ध्यान धरते।
जब तुम ध्यान धरौ सौ सांचउं, सिद्धों के जैंसे लगते॥
जित्तौ ध्यान धरत हो अपनों, उत्तई तारों गुरु हमखों।
ध्यान तपो गुणधारी गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१७॥

**ॐ ह्रूं ध्यानतपोगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

**दसलक्षण धर्म**

चौका में मौका खों पाके, कौनउं कछू सुना देवै।
अथवा उल्टी सुल्टी कै कें, उपसर्गों सौ कर लेवै॥
फिर भी मुस्काऔं सो ऐंसे, लच्छन दै दइऔ हमखों।
उत्तम क्षमा धरमधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१८॥

**ॐ ह्रूं उत्तमक्षमाधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

तुमसौ नें खबसूरत कौनउं, नें त्यागी ज्ञानी ध्यानी।
हीरे सें मजबूत तुमइं हौ, फिर भी हौ नंईयां मानी॥
चर्या में मुलाम मक्खन से, नरियल सौ करियौ हमखों।
उत्तम मार्दव धर्म धुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥१९॥

**ॐ ह्रूं उत्तममार्दवधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

माया ठगनी छल कपटों से, तुम तौ कोशों दूर रहौ।
एक नजर में टेडे-टाड़े, छलियों खों भी ठीक करौ॥
सीधी सादी गैल तुमारी, तन्नक तौ तकियौ हमखों।

उत्तम आर्जव धर्मधुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२०॥

**ॐ ह्वूं उत्तमार्जवधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

कैंसे हो तुम तौ निर्लोभी, जौ नें कोनउँ समझ सकै।
लोभ त्याग कें धरम रतन कौ, तुममें खूबई लोभ दिखै॥
कंजूसी अब तनक त्याग कें, धरम बाँट दइऔ हमखों।
उत्तम शौच धरमधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२१॥

**ॐ ह्वूं उत्तमशौचधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

झूठी मों से कबउँ नें निकरै, साँचउं-साँचउं तुम बोलौ।
सबके दिल पै राज करौ तुम, कानों में मिसरी घोलौ॥
बानी पै जिनबानी बैठी, जबइ खूब मोहौ हमखों।
उत्तम सत्य धर्मधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२२॥

**ॐ ह्वूं उत्तमसत्यधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

इन्द्री संयम प्राणी संयम, जब सें तुमनें ओढ़े हैं।
तब सें वौ तीरथ सौ बन गऔ, जितै जमा दए गोढ़े हैं॥
सुनकैं अब तौ अरज हमारी, दीक्षा दे दइऔ हमखों।
उत्तम संयम धर्म धुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२३॥

**ॐ ह्वूं उत्तमसंयमधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

रखौ नें इच्छा फिर भी सबकी, इच्छा पूरी करौ भली।
देख तुमारी कठन तपस्या, हल्ला हौ रऔ गली-गली॥
सफल साधना करौ हमारी, तनक निहारौ तौ हमखों।
उत्तम तपधारी हे ! गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२४॥

**ॐ ह्वूं उत्तमतपधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

मुठी भरौ तौ खाऔ पीऔ, बांटौ झोली भर-भर कें।
त्यागी तौरौ त्याग देख कें, मनवा नांचै सर धर कें॥

परिग्रह जैसौ हमें नें छोडो, बैरागी करियौ हमखों।
उत्तम त्याग धर्मधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२५॥
**ॐ ह्रूं उत्तमत्यागधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**
कित्तौ तौ उपकार करत हो, फिर भी अपनौ नें मानौ।
तन्नक-मन्नक राग रखौ नें, अपनौ बस आतम जानौ॥
अपने जैंसौ नगन दिगम्बर, झट्ट बना लइऔ हमखों।
हे ! आकिंचन धर्म धुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२६॥
**ॐ ह्रूं उत्तमआकिंचनधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**
तुमें देख कें ऐंसौ लागै, परम वीतरागी मिल गए।
जबइँ हजारौ भाई बैन खौं, ब्रह्मचर्य के पथ मिल गए॥
जल में कमल सरीखे तुम तौ, ब्रह्म रमण दइऔ हमखों।
ब्रह्मचर्य व्रत धर्म धुरन्धर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२७॥
**ॐ ह्रूं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मधुरन्धर आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

**षट्-आवश्यक**

नें तौ सुख में सुखी होत तुम, नें दुख में तुम होत दुखी।
बहिर्मुखी कौ भाव त्याग जौ, बन गए अंतर मुखी-सुखी॥
देख तुमारी सामायिक खों, सिद्धशिला झलकै हमखों।
हे ! सामायिक कर्ता गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२८॥
**ॐ ह्रूं सामायिकगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**
कोउ एक तीर्थंकर प्रभु की, तीनइं बिरियाँ जाप करौ।
भक्ति भाव सें तन्मय होकें, करकें नमोऽस्तु पाप हरौ॥
भक्त और भगवान मिलन को, दृश्य दिखा दइऔ हमखों।
पूज्य वंदना गुणधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥२९॥
**ॐ ह्रूं वन्दनागुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

तीनइं बिरियाँ बड़ौ स्वयंभू, करकें जब भगवान भजौ।
तबतौ ऐंसौ लगै हमें कै, चौबीसी कौ धाम सजौ।
आदिनाथ सें महावीर के, दर्श करा दइऔ हमखों।
हे ! आवश्यक स्तुतिकर्ता, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥३०॥

**ॐ ह्रूं स्तवनगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

आंगे को अनुमान लगा कें, तुमतौ अपने काम करौ।
मस्कईं मस्कईं करौ साधना, तनक भौत आराम करौ॥
लगबै से पैलें दोषों कौ, त्याग सिखा दईयौ हमखों।
प्रत्याख्यान कर्म गुण धारी, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥३१॥

**ॐ ह्रूं प्रत्याख्यानगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

वैसें तौ हुशयार भौत हौ, फिर भी कौनउं दोश लगें।
तौ निंदा आलोचन करकें, सांचे गुरु निर्दोष बनें॥
तुम सौ शुद्ध दिखै नै कौनउँ, शुद्ध बना दइऔ हमखों।
प्रतिक्रमण के कर्त्ता गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥३२॥

**ॐ ह्रूं प्रतिक्रमणगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

जित्ते सुन्दर उत्ते कोमल, फिर भी तन सें मोह नहीं।
छाले फौले आएँ तौ भी, मन में तन्नक क्षोभ नहीं॥
खड़गासन में बाहुबली से, शोभ रहे हौ गुरु हमखों।
कायोत्सर्ग ध्यानधारी गुरु, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥३३॥

**ॐ ह्रूं कायोत्सर्गगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

## तीन गुप्तियाँ

तुमरे मन की कोई नें जानें, तुम सबके मन की जानौ।
अपने मन की कबउं करौ नें, अरज कोउ की नें मानौ॥
फिरभी मन की करा लेत तुम, मन की कै दइयौ हमखों।
मनोगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥३४॥

**ॐ ह्रूं मनोगुप्तिगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

या तौ मौन रहौ तुम या फिर, बोलो तन्नक-मन्नक सौ।
वचनों खों ऐंसें बरसाऔ, जैंसें बरसै अमृत सौ॥
कित्तउ सुनलौ बचन आपके, होए नें संतुष्टि हमखों।
वचनगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥३५॥

**ॐ ह्रूं वचनगुप्तिगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

देख तुमारी कोमल काया, सांचउं हमें लगै ऐंसौ।
चलते फिरते तीरथ हौ तुम, कौनउ नंइयां तुम जैंसौ॥
देख ध्यान मुद्रा खों तोरी, सिद्धालय झलकै हमखों।
कायगुप्ति धारी हे ! गुरुवर, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥३६॥

**ॐ ह्रूं कायगुप्तिगुणसुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः अर्घ्यं...।**

**पूर्णार्घ्य**

एड़ी और चुटइया तक लौ, मूलगणों सें तुम सोहौ।
मन्द-मन्द मुस्कान बांट कें, बुन्देली खों तुम मोहौ॥
भाग्य तुमई बुन्देलखण्ड के तनकथाम लईओ हमखों॥
तुमई सरीखौ अनरघ बनबे, करें नमोऽस्तु हम तुमखों॥

**ॐ ह्रूं षट्त्रिंशगुण-सुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे नमः पूर्णार्घ्यं...।**

**समुच्चय जयमाला** (दोहा)

विद्यागुरु की भक्ति में, धूप लगै नें ठण्ड।
जयमाला में रम रहौ, सांचउं बुन्देलखण्ड॥

(जोगीरासा)

दुनियाँ में सबसे न्यारी है, भारत भूम हमारी।
भारत में बुन्देलखण्ड की, का कैनें बलिहारी॥
जब लौं कौनउं समझ सकौ नें, ए की महिमा न्यारी।
तब लों माटी कूरा जैसी, लुटी-पिटी सी भारी॥१॥

लेकिन जा कैनात सुनें कें, घूरे के दिन फिरबें।
फिर जौ तौ बुन्देलखण्ड है, भाग्य काय नें चमकें॥
जितै कबउं मुनियों के दर्शन, मिलबौ बड़ौ कठिन थौ।
सुनौ इतईं तो चतुर्मास कौ, होवौ लगै सुपन सौ॥२॥
जाड़े में जब परै माइआ, कुकर-कुकर सब जाबें।
ज्वांर बाजरा कोदों खा कें, मौं करिया पर जाबें॥
गेहूँ मिलबौ बड़ौ कठिन थौ, फैली भूख गरीबी।
लगै दण्ड बुन्देलखण्ड जौ, दिखै नें कोउ करीबी॥३॥
महावीर सें अब लों जित्ते, मुनी अज्जका वीरा।
उनमें इक्के दुक्के भए हैं, बुन्देली के हीरा॥
लेकिन बुन्देली पै जबसें, पंइयां परे तुमारे।
सांची कै दउं ए माटी के, हो गए बारे-न्यारे॥४॥
भूख गरीबी सबरी मिट गई, कोउ दिखै नें दुखिया।
खण्ड-खण्ड बुन्देलखण्ड जौ, अखण्ड हो गऔ सुखिया॥
टलें फावडों से जड़ माया, चेतन धन का कईए।
बुन्देली में समौसरण कौ, देख नजारौ रइए॥५॥
बुन्देली के भाग्य विधाता, तुमें कैत जग सारौ।
भाग्य हमौरों कौ चमकइऔ, अब नें पल्ला झारौ॥
हम बुन्देली तुम बुन्देली, रिश्तौ गजब हमारौ।
सो बुन्देली चेला चेली, अर 'सुव्रत' खों तारौ॥६॥

**ॐ ह्रूं षट्त्रिंशगुण-सुशोभित आचार्य श्रीविद्यासागरगुरुवे जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

**(दोहा)**

बुन्देली सें का बँधें, विद्यागुरु के गान।
फिर भी नमोऽस्तु हम करें, करबै खों कल्यान॥

**(पुष्पांजलिं)**

===

# विद्यागुरु बुंदेली पूजन-२

स्थापना

अरे श्रद्धा कौ चौक पुरा लइओ, और मन खों मंदिर बना लइओ।
और गुरु की पूजा कर तो लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।** (पुष्पांजलिं)

अरे ढारौ ले कलशा पानी के, और पाँव पखारो स्वामी के।
और अपने कर्मों खों धोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।**

अरे! लै लो रे कलशा चंदन के, और ताप हरौ भव बंधन के।
और निज में शीतलता घोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।**

अरे! लै लो रे पुंज चढ़ावे खों, और अक्षत आतम पावे खों।
और इतैं-उतैं अब नै डोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।**

अरे! लै लो रे पुष्प चढ़ावे खों, और मुक्ति से व्याव रचावे खों।
और मुक्ति को घूँघट खोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।**

अरे! का खानें लड़ूआ लाई के, और मीठे दूध मलाई के।
और आतम कौ रस चख तौ लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।**

अरे! लै लो रे दीया उजारे खों, और मोह कौ अंध भगावे खों।
और अंतर के नैना खोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।**

अरे! लै लो रे धूप जलावे खों, और कर्मों कौ धुआँ उड़ावे खों।
और ध्यान की धूनि लगा तो लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**

अरे! लै लो रे नरियल चढ़ावे खों, और मोक्षफलों को उगावे खों।
और भक्ति के बीजा बो तो लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।**

अरे! लै लो रे अर्घ्य चढ़ावे खों, और जीवन खों धन्य बनावे खों।
और नौने से पाँव पकर तो लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## जयमाला

ओ की नैया पार भई -२
जे जे पै गुरुवर ने नजर डार दई॥
गुरुवर है ऐसे जैसे कि भगवान,
इनकी भक्ति कर लो हो जै है कल्याण।
ओ की जय-जयकार भई-२, जे जे पै....॥१॥
गुरुवर की वाणी में झड़ते हैं फूल,
तनक सुनकै देखो उड़े कर्मों की धूल।
ओ की चमत्कार भई-२, जे जे पै...॥२॥
मुक्ति वधु ब्यावे लै जा रए बारात,
मोक्ष महल तक मोय लै जइयो साथ।
ओ नें मुक्ति वार लई-२, जे जे पै...॥३॥
मौं माँगो देते है गुरुवर वरदान,
मौ पै भी तन्नक दे रइयौ रे ध्यान।
ओली पसार दई-२ जे जे पै...॥४॥
हिरदय के आँगन में चौका पुराओ,
करके नमोऽस्तु 'सुव्रत' नै बुलाओ।
जिन्दगी सँवार दई-२, जी जी पै...॥५॥
ओ की नैया पार भई......॥

**ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

===

## आरती—आचार्य श्रीविद्यासागरजी

**(तर्ज : कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों...)**

गुरुवर की हो रई जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे! आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मौड़ा[२], ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा[२]
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे, गुरु-चरणा पखारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
थाल सजाऔ दीप जलाऔ, मंगल-मंगल महिमा गाऔ॥
नाचौ, गाऔ, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
चलते फिरते तीरथ गुरुजी, सब खौं भव से तारत गुरुजी॥
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
नगन दिगम्बर चारितधारी, ज्ञानी ध्यानी पाप निवारी॥
जगत्-पूज्य परमेष्ठी रे; मोरी किस्मत सँवारो,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
गुरु दयालु करुणाधारी, अब तौ सुन लो विनय हमारी॥
मुस्का कैं 'सुव्रत' खौं तारो रे, भव दुख सै निकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥

===

## आरती–श्री पंचपरमेष्ठी

(लय–कैसे धरें मन धीरा...)

जिनवर की बोलौ जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
पहली आरति श्री अरिहंता-२, केवलज्ञानी जिन भगवन्ता-२
झूम-झूम गुण गाऔ रे, भाग्य अपनौ सँभारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
दूजी आरति सिद्ध जिनों की-२, मुक्त हुए मुनि तपोधनों की-२
करौ साधना सुमरौ रे, मंजिल खौं निहारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
तीजी आरति आचार्यों की-२, शिव राही-दाता आर्यों की-२
करौ अर्चना पूजौ रे, करनी तौ सुधारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
चौथी आरति उवझायों की-२, ज्ञान चरित पथ के रायों की-२
करौ उपासा सेवा रे, मिलै अपनौ उजारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
पाँचवी आरति साधु जनों की-२, आतम साधक तपोधनों की-२
करौ वन्दना संगत रे, आतम खौं निखारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
छठवीं आरति जिनवाणी की-२, हितकारी जग कल्याणी की-२
चलौ गैल जिनभक्तों रे, आज्ञा उर में धारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....

===

## बुंदेली भजन–१

(चौपाई, लय-ओ! जोगी तेरौ...)

ओ! विद्यागुरु जी, आइऔ मोरे गाँव।
इंतजार में गुजरै उमरिया, कब मैं पखारु तोरे पाँव।
ओ! विद्यागुरु जी, आइऔ मोरे गाँव।–२
ऊँची नीची घाटी मिलेगी, कितऊँ पै चंदन माटी मिलेगी।
कितऊँ चिलकतौ घाम मिलेगौ, कितऊँ पै जूड़ी जूड़ी छाँव॥
ओ! विद्यागुरु जी, आइऔ मोरे गाँव।–२
कब सें पुकारै मोरी नगरिया, अनजानी सी हॉट बजरिया॥
रंग बिरंगी दुनियाँ तजकें, भूल नें जइयौ मोरो गाँव॥
ओ! विद्यागुरु जी, आइऔ मोरे गाँव।–२
तोय गाँव के मंदिर पुकारें, भक्तों के चौके चौक निहारें।
कितऊँ पै करियौ आहार गुरुजी, कितऊँ धुला लइयौ पाँव॥
ओ! विद्यागुरु जी, आइऔ मोरे गाँव।–२
दीया और पूजा की थाली, बच्चे बूढ़े भक्त और माली।
'सुव्रत' खों भी आशीष दे कें, दे दइयौ अपनी छाँव॥
ओ! विद्यागुरु जी, आइऔ मोरे गाँव।–२

## बुंदेली भजन–२

(चौपाई)

ऐसी माटी नें दुनियाँ के खण्ड–खण्ड में।
जनम पाएँ दुबारा बुंदेलखण्ड में॥
नैनागिरी कुण्डलपुर खजुराहो प्यारे।
बीना बारह ईशुरवारा पटेरिया जी न्यारे॥
मढ़ियाजी जइयौ कि नौ नौ लगत ठंड में।

जनम पाएँ दुबारा बुंदेलखण्ड में॥
पवाजी बंधाजी अहारजी पपोरा।
देवगढ़ बजरंगगढ़ करगुवाँजी जखौरा॥
सोनागिरि सोहे मन नाचै पटनागंज में।
जनम पाएँ दुबारा बुंदेलखण्ड में॥
कोनी जी थूवोन जी द्रौणागिरि पनागर।
बालाबेहट सेंरोनजी नवागढ़ भद्दलपुर॥
तीरथ करलो कि शांति मिल है बहोरीबंद में।
जनम पाएँ दुबारा बुंदेलखण्ड में॥
बानपुर चंदेरी भियादांत बाँसी।
गोलाकोट पचराई पीपरा झाँसी॥
ओरछा जइयौ कि मन झूमै परमानंद में।
जनम पाएँ दुबारा बुंदेलखण्ड में॥
हीरा से बंदेलखण्ड में मंदिर किले हैं।
सुव्रत के स्वामी विद्यागुरुवर मिले हैं॥
समवसरण लागे संघों के झुण्ड-झुण्ड में।
जनम पाएँ दुबारा बुंदेलखण्ड में॥

## बुंदेली भजन–३

**(चौपाई)**

मन हो रऔ है चौका लगाउनें, गुरुवर खौं घर पै बुलाउनें।–२
दान के होते चार प्रकार, औषध शास्त्र अभय आहार,
इनकी महिमा अपरम्पार।
दान दै कें आहार अब कराउनें, गुरुवर खौं घर पै बुलाउनें।
मन हो रऔ है...॥
विद्यासागर मुनि महाराज, मोरी भी रख लइओ लाज,
चौका में आ जइऔ आज।

चरणों खौं चौका में धुलाउनें, गुरुवर खौं घर पै बुलाउनें।
मन हो रऔ है...॥
नौनें सें दें कें आहार, हाथ जोड़ कें करूँ पुकार,
फिर अइऔ लेवे आहार।
श्रद्धा भक्ति सें आहार कराउनें, गुरुवर खौं घर पै बुलाउनें।
मन हो रऔ है...॥
आहार करकें हे! महाराज, मोखों संगै रख लो नाथ,
दीक्षा कौ देऔ आशीर्वाद।
दीक्षा पाकें तो धन्य हो जाउनें, गुरुवर खौं घर पै बुलाउनें।
मन हो रऔ है...॥

## बुंदेली भजन–४

(चौपाई)

बब्बा-बब्बा कहाँ के ? कहाँ के ? धरमपुरा के धरमपुरा के ॥
बऊ सरक गई नदिया में, बब्बा ढूँढें बगिया में।
बब्बा खों लग गऔ काँटौ, बब्बा लै गऔ सन्नाटौ॥
धर दई टोपी, पर लए पाँव।
अब न लें हों बऊ कौ नाँव॥
बब्बा-बब्बा कहाँ के ? कहाँ के ? धरमपुरा के धरमपुरा के ॥
बब्बा ने बऊ खों छोड़ौ, गुरुवर सें नाता जोड़ौ।
लै लई दीक्षा भय मुनिराज, पड़गाहन खों कड़ गए आज।
बब्बा खों बऊ ने पड़गा कें, नौने से आहार कराकें।
नची बँधइया, दऔ कलानंद।
बाँटौ बुलौआ, आऔ आनंद॥
बब्बा-बब्बा कहाँ के ? कहाँ के ? धरमपुरा के धरमपुरा के ॥

===

## बुंदेली भजन–५
## गुरुवर कौ द्वारौ

(तर्जः- कैसे धरे मन धीरा रे...)

गुरुवर कौ द्वारौ खूब सजौ रे, दर्शन करने आए ।
हाँ.. हाँ रे, पूजन करबे आए ॥
तीर्थंकर से गुरुवर मोरे-२, समोसरण सौ संघ सजौ रे,-२।
सुखी-सुखी सब प्राणी रे, आरत करबे आए,
हाँ.. हाँ रे, भगती करबे आए॥ गुरुवर कौ द्वारौ...
दिव्य धुनी सी प्रवचन कक्षा-२, सबइ जनों की इतै सुरक्षा-२।
काल लगै चौथौ जैसों, वन्दन करबे आए ।
हाँ.. हाँ रे, नन्दन करबे आए॥ गुरुवर कौ द्वारौ...
अपने हाथ मूड़ पै धर दो-२, अपनी करुणा मो पै कर दो-२।
खाली झोली भरदो रे, आशा लैं कै आए ।
हाँ.. हाँ रे, दासा बन कैं आए॥ गुरुवर कौ द्वारौ...
विद्या माया तुमरी दासी-२, तुम बैरागी गुरु संन्यासी-२।
मुक्ति रमा के स्वामी रे, सेवा करबे आए ।
हाँ.. हाँ रे, देवालय में आए॥ गुरुवर कौ द्वारौ...
तारनतरन सबइ के पालक-२, शिवुपुर-गाड़ी के तुम चालक-२।
'सुव्रत' खौं दइयौ शरणा रे, पइयाँ परबे आए ।
हाँ.. हाँ रे, छइयाँ लैबे आए॥ गुरुवर कौ द्वारौ...

===

## बुंदेली भजन—६
## गुरुवर के संगै को रै है

**(तर्ज—मिल है ना, मिल है ना, नर भव कौ हीरा जो मिल है ना...)**

को रै है, को रै है - गुरुवर के संगें को रै है।
पाँचो पापों खौं जो तज है-२, और पाँच व्रत जो लै है.. जो लै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
तीन मकार व्यसन सब तज है-२, होटल में जो नैं जै है... नैं जै है..
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
घर दारा बन्धु खौं तज कैं-२, नगन दिगम्बर जो रै है... जो रै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
धन दौलत कुर्सी तज दै है-२, पिछी कमण्डल जो लै है... जो लै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
केशलौंच कर है उपवासा-२, पैदल-पैदल जो जै है...जो जै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
अन्तराय पालै भोजन में-२, ठाडें ठाडें जो खै है.. जो खै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
रूखो-सूखो जो मिल जावै- २, एकई बिरियाँ जो खै है.. जो खै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
दाँत धोय नै, नहीं नहावै-२, सबई परीषह जो सै है.. जो सै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
गद्दा पल्ली मखमल तज कै-२, काठ तखत पै सो जै है... सो जै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
कबऊँ लडै नैं गाली देवै-२, मीठौ - मीठौ कम बोलै... कम बोलै...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...

ठण्डी गर्मी वर्षा सै है-२, अपने में थिर जो रै है.. जो रै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
समता-रस खाँ खूबई चीखै-२, ममता माया तज दै है.. तज दै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
ज्ञान ध्यान तन में रत रै है-२, भोग-विषय सब तज दै है... तज दै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
दुखियों की सेवा जो कर है-२, निंदा चुगली नै कर है... नैं कर है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
अपने सब आवश्यक पालै-२, सबई बुराई तज दै है... तज दै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
मौन रहे आतम खाँ ध्यावे-२, सबई परीग्रह तज दै है... तज दै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
देव शास्त्र गुरुओं खौ पूजै-२, वीतराग की जय बोलै.. जय बोलै..
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
पूजन पाठ करै गुण गावै-२, णमोकार-माला दै है.. माला दै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
वसुधा खौं मानै परिवार-२, मंगल-मंगल कर दै है.. कर दै है...
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
जियो और जीने दो सबको-२, धर्म अहिंसा जो लै है.. जो लै है..
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...
दया धरम खौं नैं विसरावै-२, 'सुव्रत' घर कैं जय बोलै.. जय बोलै..
गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है...

===

# भक्तामर स्तोत्र

**(मात्रिक सवैया/आल्हा)**

भक्तामर के नत मुकुटों की, मणियों में जो भरें प्रकाश।
जग में पसरौ पाप अँधेरौ, जो कर देवें सत्यानाश।
भवसागर में डूबे जन खों, जो युगादि में भए जहाज।
नौंने से कर उने नमोऽस्तु, उनके गोड़े पर लूँ आज॥१॥

सबरे श्रुत की तत्त्व बुद्धि पा, जो खूबई बन गए हुसयार।
तीनंई जग के मन खों मोहें, ऐसे रच स्तोत्र हजार।
बड्डे बड्डे स्तोत्रों सें सुरपति सें स्तुत जिनराज।
उन आदिबाबा की स्तुति, मोखों भी करनें है आज॥२॥

जैंसें जल में परबे वारी, चन्दा मामा की परछांई।
तन्नक से मौंड़ा मौंड़ी बिन, कौन पकरबे मचलै भाई।
ऊँसइ मोय कछू नैं आवे, तौ भी सबरी लाज विसार।
सुर अर्चित जो पद उनके मैं, गुण गावे हो गओ तज्जार॥३॥

जैंसें सागर खों हातों सें, जे में हो मगरा घड़याल।
उत्तई पै तूफान उठें तौ, पार करै को माई कौ लाल।
ऊँसइ चन्दा मामा जैंसे, स्वच्छ गुणों के सागर जौन।
उनके गुण गा सकें नें सुरगुरु, तौ गावे में समरथ कौन॥४॥

जैंसें अपने शिशु के लाने, लाड़ प्यार सैं राखनहार।
का हिरनी नैं लड़े शेर सैं, अपनी हिम्मत बिना विचार।
ऊँसइ हिम्मत बिना विचारें, भक्ति भाव सैं मैं मजबूर।
हे मुनीश! आपइ कौ संस्तव, करबे उद्यत भओ भरपूर॥५॥

जैंसें जब बसन्त में देखें, मधुर गुच्छ आमों कौ मौर।
तौ कोयल जौ बोलै ओ में, जौई एक कारन नैं और।
ऊँसइ मैं अज्ञानी मोरी, खिल्ली उड़ाएँ जानमकार।
तौ भी मोय तुमारी भक्ति, करै बोलवै खौं लाचार॥६॥

ज्यों जग में भौंरे सी करिया, अँधयारे की पसरी रात।
किरन ताक एकइ सूरज की, झट्ट कुजाने कहाँ विलात।
ऊँसइ दुनियाँ के मान्सों के, भव-भव के एकट्टे पाप।
नाथ! तुमारे संस्तव सैं बस, छिन में छय हों आपई आप॥७॥

मैं तन्नक सी बुद्धि बारौ, चालू करूँ बखान तुमाव।
ऐसों मानूं कै जौ संस्तव, पाकै तुमरौ संग प्रभाव।
ऊँसइ सबरौं कौ मन हर है, जैंसें साँचउं जल की बूँद।
कमलों के पत्तों पै गिर कैं, मोती सी चमकत है खूब॥८॥

जैंसें सूरज कौ का कैंनें, ओ की एकइ किरन निहार।
तालाबों के सबइ कमल तौ, हँसे खिलें लैं आँए बहार।
ऊँसइ बिना दोष कौ संस्तव, ओ की का कैंनें है बात।
कथा अकेली हे प्रभु तोरी, जग के सबरे पाप नशात॥९॥

ए में भौत बड़ों का अचरज, हे जगभूषण! हे जगनाथ!
कै नौंने-नौंने सद्गुण सैं, जो करकैं स्तुति गुण-गात।
वौ बन जाए तुमारे घांई, पर औ सैं का मतलब होय।
जो नैं बनावै अपने घांई, दे कैं अपनी दौलत मोय॥१०॥

जैंसें चन्दा जैंसौ उजरौ, मीठौ क्षार सिन्धु कौ नीर।
पी कैं को चखबौ चाहेगौ, क्षार सिन्धु कौ खारौ नीर।

ऊँसइ बिन पलकैं झपकायें, तुम तौ हौ दर्शन के लाक।
तुमें देख कैं और कितउँ तौ, टिकै लगै नैं मोरी आँख॥११॥

तीन लोक के वे अणु जिनकौ, ठण्डौ पर गऔ सबरौ राग।
और भौत खबसूरत हैं जो, जिनसैं तोय बनाऔ नाथ।
वे परमाणू ए धरती पै, उत्तइ हते विरागी रूप।
जबइं कोउ नैं तुमरे जैंसौ, खबसूरत चैतन्य सरूप॥१२॥

कितै तुमाई सुन्दर सी मुंइयां, सुरासुरों की नजर चुराए।
जीतै तीनंई जग की सबरी, भौतइ खबसूरत उपमांए।
और कितै बौ बिम्ब चाँद कौ, मैलौ-दागी सौ कहलाए।
जौन छेवले के पत्तों सौ, दिन में फीकौ सौ पर जाए॥१३॥

पूरे चंदा जैंसे उजरे, स्वच्छ गुणों के कला कलाप।
वे तुमाय गुण तीनंई जग खौं, लांक-लांक जा कैवें बात।
कै तीनंई जग के ईश्वर के, रहें आसरे बदलें चाल।
उनखौं इच्छा सें फिरवे सें, रोक सकै को माई कौ लाल॥१४॥

ए में का कैसों अचरज कै, सुर नटियों के तिरिया चरित्र।
तुमाय मन कौ तनक-मनक सौ, चिगा सकौ नैं सुन्दर चित्र।
प्रलयकाल की जौन हवा सैं, हल्कौ पर्वत तौ हिल जाए।
पै का ओ सैं मंदर गिरि कौ, शिखर तनक सौ भी हिल पाए॥१५॥

धुआँ तेल उर बिना बाति के, तुम तौ आतम जोत जलाए।
ओ सैं सबरे तीनंई जग खौं, परकट करकैं तुमंई दिखाए।
जौन पहारौं खौं झकझौरे, ऐंसी हवा बुझा नैं पाए।
सब संसार बताबै बारे, तुम तौ अद्‌भुत दिया कहाए॥१६॥

जो कब्भंऊ नैं डूबत होवे, जे खौं राहू ढक नैं पाए।
जे कौ करिया बदरों सैं तौ, कबऊं असर भी घट नैं पाए।
तीनंई जग खौं सहज दिखावे, संसारी सूरज सैं तेज।
हे मुनीन्द्र! तुम तौ ऐंसे हौ, तुमें नमोऽस्तु होवे सिर टेक॥१७॥

सदा उदित जो रैबे बारौ, मोह अँधेरौ जे सैं जात।
राहू मौं कौ कौर बनै नैं, बदरों सें जो छिप नैं पात।
बेंजंइ तेज चमकबे बारौ, जो सब जग कौं हर कें अंध।
प्रभु! अपूरब चंदामण्डल, सौ सोहे तुमाव मौं चंद॥१८॥

जैंसें सोहें फसलें पक कैं, जग में कटवे खों हो जात।
तौ जल के कारे बदरों कौ, कऔ तौ कारज का रै जात।
ऊँसइ तुमांइ चंदा सी मुंइआ, करै अंध कौ काम तमाम।
तौ रातों में चंदा सैं का, दिन में सूरज सैं का काम॥१९॥

जैंसें जो असली मणियों की, चमक-धमक की फैले जोत।
का ऊँसी कब्भंउ काँचों की, चकाचौंध किरनों में होत।
ऊँसइ तुममें ज्ञान भरौ जो, ओ की बात नैं सूझै मोय।
ऊँसौ ज्ञान अन्य देवों में, का सोहै! जो झूठौ होय॥२०॥

मोय लगत है ऐंसों कै प्रभु, जग के सब प्रभु अच्छे होंय।
लेकिन जब सैं तोखों देखौ, साँचउं कोऊ जमे नैं मोय।
आपई में संतोष मिलत है, और लाभ का तोसैं होय।
ए धरती पै और कोउ तौ, रिझा सकै नैं कब्भंऊ मोय॥२१॥

सौ-सौ लुगाइएँ सौ-सौ मौंड़ा, जनत रेत हैं सौ-सौ ठौर।
पर तुम सौ जो मौंड़ा जन्में, वा मताई है नंइयां और।

जैंसें तरइयों की टिमकारें, सबई दिशाओं खौं टिमकांय।
लेकिन पूरब दिशा अकेली, परतापी सूरज जन पाय॥२२॥

हे मुनीन्द्र! तुमखों मुनियों नैं, सूरज के रँग को बतलाऔ।
परम पुरुष जैंसे तुम निर्मल, मोह अँधेरौ तुंमई नशाऔ।
मौत जीत कें मृत्युंजय तौ, बन जावें पाकर कैं तोय।
ए के सिवा मोक्ष पावे को, भलों नैं दूजौ रस्ता होय॥२३॥

सज्जन कहें आप खों अव्यय, विभू असंख्य आद्य अचिन्त्य।
विदित योग योगीश्वर ईश्वर, अनंगकेतू अमल अनंत।
एक अनेक ज्ञान स्वरूप भी, और लेत ब्रह्मादि के नाम।
मोय कछू नें सूझै मैं तौ, करकें नमोऽस्तु करूँ प्रणाम॥२४॥

विद्वानों सें पूजित हौ सो, आपई रए बुद्ध भगवान।
तीनंई जग में शांति करौ सो, आपई हौ शंकर भगवान।
मोक्षमार्ग की विधि कैबें से, आपई हौ ब्रह्मा भगवान।
प्रभु! आपई नारायण हौ सो, मैं तौ खूबई करूँ प्रणाम॥२५॥

त्रय जग कौ दुख हरबे बारे, तोखों खूब नमोऽस्तु होय।
धरती के उजरे आभूषण, तोखों खूब नमोऽस्तु होय।
हे! तीनंइ जग के परमेश्वर, तोखों खूब नमोऽस्तु होय।
हे जिन! भवसागर के शोषक, तोखों खूब नमोऽस्तु होय॥२६॥

हे मुनीश! जब सबइ गुणों नें, कितउँ कोनिया लौ नें पाई।
तौ तुमाय लिंगा सब दौरे, तुमखों पाके शांति पाई।
और आसरे भौतइ पाकें, दोष घमण्डी सबरे होय।
वे सपने में दिखे नैं तुममें, ए में अचरज कैंसो मोय॥२७॥

ऊँचे अशोक तरु के नेंचें, हे प्रभु! तुमरौ सुन्दर रूप।
ऐंसें सोहै जैंसें सांचउं, जे की फैंलें किरनें खूब।
जौन अंधेरौ सबइ मिटाबै, बदरों के बाजू में होय।
ऐंसे सूरज बिम्ब सरीखे, लगौ सुहाने तुमतौ मोय॥२८॥

जड़े खचाखच रत्न जौन में, जो छोड़ें किरनों की छाप।
ओ सिंहासन पै सोने से, सुन्दर ऐंसे चमको आप।
जैंसे ऊँचे गिरी शिखर पै, नभ में अपनी किरन बिखेर।
सूरज बिम्ब सरीखे सोहौ, मोरी तरफ तनक तौ हेर॥२९॥

स्वच्छ कुन्द के फूलों जैंसे, भले ढुरत चँवरों के बीच।
तुमाई तौ सोने सी काया, चमकै जी पै दुनियाँ रीझ।
ऐंसें सोहें जैंसे ऊँचे, मेरु के तट सोने घांई।
उंतई बैत झरनों सें ऊँगै, चम-चम चंदा की परछांई॥३०॥

चंदा जैंसे खूबई सोहें, रोकें सूरज कौ संताप।
मोती की झालर बारे जे, लटकें ऊपर आपई आप।
तीनंई छतर बताबें जौ कि, तीनंई जग के तुम सम्राट।
मोखों दै दो अपनी छईयां, मैं तौ ताकूं तोरी बाट॥३१॥

सबई दिशाओं में जो गूंजै, हो-हो कैं खूबई गंभीर।
तीनंई जग खौं धर्म समागम, कौ वैभव दैबे में वीर।
जैन धर्म के स्वामी जी के, यश की वाँचै जय-जयकार
बजें ढोल रमतूला नभ में, जोई दुन्दुभी प्रातिहार्य॥३२॥

महकदार पानी की बूंदें, संगै-संगै मन्द बयार।
सुन्दर पारिजात संतानक, फूल नमेरु हैं मन्दार।

जे सबरे मिल जब बरसें तौ, सांचउं ऐंसौ लागे मोय।
जैंसें तोरे वचनामृत की, नभ से झर-झर बरसा होय॥३३॥

तीनंई जग में जो चमकत हैं, उन सबरों की चमक लजाय।
सदा ऊगबे बारे लाखों, सूरज जैसों चमकत जाय॥
चन्दा जैसों सुन्दर-सुन्दर, भामण्डल है भौत विशाल।
जे की चमक रात खौं जीते, मोय बना दै चेतन लाल॥३४॥

स्वर्ग मोक्ष जाबे बारों खौं, गैल ढूंढ़बे करै सहाय।
तीनंई जग के जीव जन्तु खौं, साँचौ धर्म तत्त्व समझाय।
साँचौ हितकौ अर्थ बताबै, सब भाषा में घुल मिल जाए।
ऐंसी तोरी दिव्य धुनी है, तन मन के सब रोग नशाए॥३५॥

नए-नए से खिले खुले से, कुन्दन जैंसे कमल समूह।
जिनके नौं की किरनें चमकें, सबई ओर सें खूबइ खूब।
ऐंसे चरन तुमारे सुन्दर, जितै धरौ तुम हे भगवान।
उतइं देव कमलों खौं रच कैं, धरती कर दें रतन समान॥३६॥

जैंसें सूरज जोती सैं हो, अँधयारे कौ सत्यानाश।
टिम-टिम करते और ग्रहों कौ, का ऊँसौ हो सके प्रकाश।
ऊंसई भयी विभूती तोरी, लगी सभा जब तत्त्व बताए।
का ऊंसी है और कोउ की, तुम सौ कोउ नजर नैं आए॥३७॥

गण्डस्थल सैं मद झर रऔ है, जे पै भौंरे भी मंडराएँ।
जे सें ओ कौ क्रोध बढ़े सो, इतै-उतै फिरकैं पगलाएँ।
खूब ऊधमी सौ ऐरावत-हाथी सामें सैं आ जाए।
ओ खों देख डरै नैं वौ तौ, जो तोरी छइयाँ पा जाए॥३८॥

फाड़-फूड़ कैं गण्डस्थल खों, हाथी के सिर सैं बगराए।
खून-मांस सैं लतपथ उजरे, मुक्ताओं सैं भू चमकाए।
खूब छलांगें मार-मार कें, करैं वार पंजों में डार।
ऐंसौ शेर नैं मारे ओखों, जो पाए प्रभु चरन-पहार॥३९॥

भौत भयंकर प्रलयकाल की, बेहर सें जो भई विकराल।
जे के चिट-चिट तिलगा उचटें, खूबई धधके लालई लाल।
दुनियां खौं खाबे सी दौरै, वन-आगी सामें सैं आए।
तौ भी तोरे नाम गुणों के, कीर्तन जल सैं सब बुझ जाए॥४०॥

मतवारी कोयल सी करिया, जे की आँखें लालई लाल।
करकैं क्रोध भऔ उद्दण्डी, तबई उठाकें फन विकराल।
ऐंसे सांप खों दोई पांव से, हो कें निडर लांक वो जाए।
जे के दिल में तुमाय नाम की, दवा नाग दमनी आ जाए॥४१॥

जितै खूब घुड़वा उचकत हों, होय हाथियों की चिंघार।
उतईं भयंकर शत्तुर सेना, कर रई होवै खूब दहार।
युद्धों में तोरे कीर्तन सें, शत्रु कौ भऔ ऐंसौ काम।
जैंसें उगत सूर्य की किरनें, करें अंध कौ काम तमाम॥४२॥

भालों की नोकों से फाड़े, हथियों कौ बै रऔ है खून।
ओई धार खों पार करन खों, जोद्धाओं खों चढ़ौ जुनून।
ऐंसे महाभयंकर रन में, शत्रु पै जय मुश्कल होय।
तो तोरौ पा चरन कमल वन, शत्रु पै जय पक्की होय॥४३॥

जितै भयंकर मगरा होवें, और मछरियों की टकरार।
संगै-संगै बडवानल सैं, भऔ समुन्दर लहरोंदार।

ओ में फँसौ जहाज होए तौ, यात्री तौ खूबई घबरांए।
लेकिन तोरौ सुमरन करकैं, होकें निडर पार हो जांए॥४४॥

भौत भयंकर भऔ जलोदर, जे सें झुक गई हो करहाई।
जे सें भई दयनीय दशा सो, जीवे की सब आश गंमाई।
असाध्य रोगी भी तौ तोरे, चरनामृत की धूर लगांए।
कामदेव सें खूबई जादा, स्वस्थ मस्त नौनें हो जांए॥४५॥

गोड़े सें लै कें घुटकी लौं, बड्डी कसी साँकरें होंए।
जे की नौकों सें तन छिल गऔ, खूबई छिल गईं जांगें होंए।
ऐंसे मान्स निरंतर सुमरें, तोरे नाम मंत्र कौ जाप।
तौ झट्टईं बंधन के भय सैं, मुक्त होंए वे आपई आप॥४६॥

हे बाबा! तोरौ जौ स्तव, ज्ञानी जो भी पढ़े पढ़ाए।
वौ तौ शेर नशीले हांती, साँप युद्ध सैं नैं घबराय।
ओ कौ सागर और जलोदर बन्धन कौ डर ऐंसो जाए।
जैंसें डर खुद डरा-डरा कैं, झट्टइँ गदबद दै भग जाए॥४७॥

हे जिनेन्द्र! जा मैंने तोरी, भक्ति गुणौ कौ धागौ डार।
माला गूंथी रंग बिरंगी, अक्षर वारी फूलोंदार।
तोरी जा स्तुति की माला, धरै गरे में जो दिन रात।
'मानतुंग' के घांई बनैं वे, मोच्छ लच्छमी झट्टइँ पात॥४८॥

===

## जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥१॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥२॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥३॥
दर्शन बिना आपके प्रभु हम, चैन न पाएँगे।
बिना आपके नयन हमारे, आँसु बहाएँगे॥
बिन माता के बच्चे जैसे, रह ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥४॥
सदा आपके दर्शन पाएँ, यही भावना है।
चरणों में स्थान मिले बस, यही प्रार्थना है॥
अपने जैसा हमें बना लो, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥५॥

===